αDISCUSSION ON THE "GLORIOUS JOURNEY OF 75 YEARS OF THE CONSTITUTION OF INDIA"- *Contd.*

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, further discussion on the "Glorious Journey of 75 Years of the Constitution of India" raised by Shrimati Nirmala Sitharaman, on the 16th December, 2024.

I, now, call upon the Members whose names have been received for participation in the discussion. Shri Jagat Prakash Nadda.

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री; रसायन और उर्वरक मंत्री तथा सभा के नेता (श्री जगत प्रकाश नड्डा): माननीय सभापति महोदय, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं और धन्यवाद व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे इस ऐतिहासिक पल पर, ऐतिहासिक मौके पर, जब हम Glorious Journey of 75 years of the Constitution of India पर चर्चा कर रहे हैं, तो आपने मुझे भी इसमें बोलने का मौका दिया है। मैं सबसे पहले तो संविधान के निर्माताओं को, जिन्होंने गहन चिंतन, गहन मनन और चर्चा करके, एक तरीके से कहा जाए, तो उस चिंतन और मनन का essence जो हमें कांस्टीट्यूशन में देखने को मिलता है, उस पर उन्होंने deliberate किया और यह संविधान हम सबको दिया, इसके लिए देश हमेशा उनके प्रति कृतज्ञ है और हमेशा याद रखेगा कि किस तरीके से कांस्टीट्युएंट असेम्बली ने deliberate करके हमारे कांस्टीट्यूशन को एक शेप दी। हम दो वर्ष पहले आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे थे। हम सब लोग बहुत ही भाग्यशाली हैं, जिनको यह मौका मिला कि हम आजादी के अमृत महोत्सव में भागीदार बन सकें। आज हम संविधान के एडोप्शन पर अपने 75 वर्ष पूरे होने पर इस मौके के भी चश्मदीद गवाह बन रहे हैं। कुछ ही समय बाद, कुछ ही दिनों बाद हमें अपने republic को, गणतंत्र को 75 साल पूरे होते हुए देखने का भी सौभाग्य मिलेगा और उसका भी चश्मदीद ग्वाह होने का मौका मिलेगा। ये जो celebrations हैं, ये जो हम उत्सव के रूप में मनाते हैं, यह एक तरीके से हमारी संविधान के प्रति समर्पण, संविधान के प्रति प्रतिबद्धता, संविधान के प्रति commitment को मजबूती प्रदान करता है। चाहे कोई सदन में उस तरफ हो, चाहे इस तरफ हो, चर्चा, वाद-विवाद और discussion, कुल मिलाकर ये सारे discussion एक तरीके से हम सबको अपने संविधान को मजबूती देने में, commitment के साथ खड़े होने में एक अवसर प्रदान करता है। इसलिए इस अवसर को, राष्ट्रीय लक्ष्य को पूरा करने के लिए हम सब इसका सदुपयोग करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। हम सब जानते हैं कि भारतवर्ष largest democracy तो है ही, लेकिन जैसा हमारे प्रधान मंत्री जी ने कहा कि it is not only the largest democracy, but it is the mother of democracy. That we have to understand. यह प्रजातंत्र की जननी है और जब हम इस largest democracy की बात करते हैं, तो हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि संविधान समिति के सदस्य और संविधान के निर्माता इस बात को जानते थे कि यह देश nation in making नहीं है, यह नेशन था, पुरातन देश था और

α Further discussion continued from the 16th Decemder, 2024.

यह पुरातन देश हमारी मान्यताओं के आधार पर, हमारी संस्कृति के आधार पर, हमारे ethos के आधार पर, हमारे पुरातन विचार पर यह समाहित था और इसलिए जब आप Constituent Assembly की debates देखेंगे, तो हमेशा भारत की संस्कृति, भारत के गौरवमयी इतिहास में इसका बार-बार उल्लेख होता है। जब हम पुरातन विचार की बात करते हैं, हम Indian ethos की बात करते हैं, तो Indian ethos में हम पाते हैं कि democracy comprises freedom, acceptability, equality and inclusivity in society; it allows the common citizens to lead a dignified life. इसके लिए हम समर्पित हैं और यह विचार Constituent Assembly के सदस्यों के मन में पूर्ण तरीके से समाहित था और यह चर्चा हम सबको देखने को मिलती है।

(**उपसभापति महोदय** *पीठासीन हुए।*)

अगर हम ऋग्वेद की बात करें, अथर्ववेद की बात करें और हम अपने पुराने मैन्युस्क्रीप्टस की बात करें, तो हमें ध्यान में आता है कि सभा, समिति, संसद, इन सभी शब्दों का प्रयोग हुआ है। यह इस बात को बताता है कि यहाँ डिस्कशन, डिबेट और डेलिब्रेट हमारे इथोज, हमारे कल्चर और हमारी संस्कृति में विराजमान रहा है और इसी को आगे बढ़ाने के लिए हमारे संविधान निर्माताओं ने इस बात को ध्यान में रखा है कि उन बातों को पुन: समझकर, ध्यान में रखकर, अपने गौरवमय इतिहास को ध्यान में रखकर, अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता को ध्यान में रखकर यह जो राष्ट्र है - since times immemorial - उसको ध्यान में रखकर हम अपने संविधान का निर्माण कर रहे हैं।

महोदय, हम लोग जम्बूद्वीप, भारतखंड, आर्यावर्त, भारतवर्ष आदि शब्दों को आज़ादी से बहुत-बहुत वर्ष पहले प्रयोग में लाए थे। यह भी इस बात का प्रमाण है कि हमने निश्चित रूप से अपनी संस्कृति को ध्यान में रखकर संविधान की फॉर्मेशन की है। मैं यहाँ पर यह बात भी ध्यान में लाना चाहता हूं कि आजकल जब हम संस्कृति की बातचीत करते हैं, तो कई बार कई लोगों को तकलीफ़ भी होती है, जब हम संस्कृति की बात करते हैं, तो कई बार लोग यह महसूस करते हैं कि हम progressive नहीं हैं। मैं उनके ध्यान में सिर्फ यह बात लाना चाहता हूं कि संविधान की मूल प्रति में भी अजंता एलोरा की गुफाओं की छाप दिखती है। हम सबको उसमें कमल की भी छाप दिखती है और कमल इस बात को प्रतिबिंबित करता है, इस बात को प्रतिलक्षित करता है कि हम कीचड़ में से, दलदल में से निकलकर, आज़ादी की लड़ाई लड़कर नई सुबह के साथ खड़े होने के लिए तैयार हैं, नये संविधान के साथ खड़े होने के लिए तैयार हैं। हमारा संविधान भी उस कमल से हमें यह प्रेरणा देता है कि हम तमाम मुसीबतों के बावजूद प्रजातंत्र को मजबूत करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे - हम इस कमिटमेंट के साथ खड़े हैं।

महोदय, अगर मैं पिछले 75 साल की यात्रा की चर्चा करूं, तो मैं इतना जरूर कहना चाहूंगा – जिसका उल्लेख आदरणीय वित्त मंत्री जी ने डिबेट को प्रारंभ करते हुए किया था, उन्होंने बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर जी को उद्धृत किया था, उन्होंने उसे बाबा साहेब अम्बेडकर के शब्दों में कहा था। इससे पता चलता है कि बाबा साहेब अम्बेडकर कितने दूरंदेशी थे, उनकी दूरदृष्टि कितनी थी। How farsighted he was! I would repeat what he said. Yesterday, Shrimati Sitharaman had elaborated it but I am repeating it. It says,

"However good a Constitution may be, it is sure to turn out bad because those who are called to work it, happen to be a bad lot. However bad a Constitution may be, it may turn out to be good if those who are called to work it, happen to be a good lot." मैं इसको इसलिए उद्धृत कर रहा हूं, क्योंकि मेरे वक्तव्य में good lot और bad lot बार-बार आने वाला है। That we have to understand. हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान को बहुत गहराई से रखा था, लेकिन संविधान के साथ छेड़छाड़ करना bad lot ने शुरू से ही ठान लिया था। जब वह bad lot ने ठाना – मैं जर्नी की बात कर रहा हूं, यात्रा की बात कर रहा हूं, मेरा मानना है कि जब, there are objective decisions, we get right answers; we get good results. But, when there are subjective decisions, we get bad lot; we get bad answers; we get wrong answers. और हमें इस बात को समझना चाहिए। आप देखिए कि देश को जोड़ने का काम भारत के तत्कालीन होम मिनिस्टर, आदरणीय सरदार पटेल जी को दिया गया। मैं यह गौरव के साथ कह सकता हूँ और मुझे बहुत खुशी भी हुई कि मैंने बहुत समय बाद काँग्रेस की तरफ से भी सरदार पटेल का नाम सुना। बहुत दिनों बाद! ...(**व्यवधान**)... After years, I heard from the *mukharvind* of the Congress people speaking about Loh Purush Sardar Vallabhbhai Patel. उन्होंने 562 रियासतों को जोड़ा, the Iron Man, and one was left -- that one which was left was Jammu and Kashmir – to the then Prime Minister Shri Jawaharlal Nehru...

श्री उपसभापतिः माननीय नड्डा जी, एक मिनट का समय दीजिए।

WELCOME TO THE PARLIAMENTARY DELEGATION FROM ARMENIA

श्री उपसभापतिः माननीय सदस्यगण, on behalf of this august House, I have great pleasure in welcoming H.E. Mr. Alen Simonyan, President of the National Assembly of the Republic of Armenia along with the Members of the Parliamentary Delegation who are on a visit to India as our honoured guest.

Hon. Members, the Delegation arrived in Delhi from Armenia on Monday, 16th December, 2024. They are now seated in the Special Box. Besides Delhi, they will also visit Jaipur and Agra before their departure from India. We wish them a pleasant and fruitful stay in our country. Through them, we convey our greetings and best wishes to the Members of Parliament of Armenia, the Government and the friendly people of Armenia.